एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

संघर्ष से नवाचारः स्ट्रॉबेरी की खेती से सफलता की कहानी

डॉ. द्वारका[1], डॉ. सोनलकुमार गोवर्धन घुगल[2], डॉ. राम कुमार राय[3], डॉ. प्रिंस साहू[4], डॉ. शबनम कुमारी[5] एवं *निशा चढ़ार[6]

[1]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, ज. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[2]सहायक प्राध्यापक (कॉन्ट्रेक्चुअल), कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश, भारत

[3]अतिथि शिक्षक, उद्यानशास्त्र विभाग, ज. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[4]सहा. प्रा., कीट विज्ञान विभाग, तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ एग्री. साइंसेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

[5]सहा. प्रा., सस्यविज्ञान विभाग, तीर्थंकर महावीर कॉलेज ऑफ एग्री. साइंसेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

[6]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

श्री सुरेश कुमार मेहरा की कहानी संघर्ष, परिश्रम और नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। बंजर एवं पत्थरीली भूमि से प्रारंभ हुई खेती आज आधुनिक तकनीक, जैविक पद्धति और बागवानी फसलों के माध्यम से एक सफल मॉडल बन चुकी है। परिवार के सहयोग, कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्र के मार्गदर्शन तथा निरंतर सीखने की इच्छा के कारण उन्होंने खेती को एक लाभकारी एवं टिकाऊ व्यवसाय में परिवर्तित किया है। उनकी सफलता अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत है और यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन एवं परिश्रम से कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की जा सकती है।

1. किसान का परिचय

नामः श्री सुरेश कुमार मेहरा, पिता का नामः श्री वृंदावन मेहरा, माता का नामः श्रीमती जनक रानी मेहरा, जन्म वर्षः 1990, शिक्षाः आठवीं कक्षा, ग्रामः ऊंटकटा, पोस्टः सहजपुर, तहसीलः केसली, जिलाः सागर (मध्यप्रदेश), पिन कोडः 470235, भूमि स्वामित्वः लगभग 5 एकड़, परिवारः संयुक्त परिवार (लगभग 12 सदस्य)।

2. प्रारंभिक जीवन और संघर्ष

श्री सुरेश कुमार मेहरा का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से प्रारंभ हुआ। वर्ष 1995 में उनके पिता श्री वृंदावन मेहरा ने 5 एकड़ बंजर एवं पत्थरीली भूमि खरीदी थी। उस समय भूमि खेती योग्य नहीं थी तथा सिंचाई की कोई व्यवस्था भी उपलब्ध नहीं थी। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण जीविका चलाने के लिए महुआ बीनना, तेंदूपत्ता तोड़ना तथा मजदूरी जैसे कार्य करने पड़ते थे। बचपन में सुरेश कुमार की पढ़ाई में विशेष रुचि नहीं थी, इसलिए उन्होंने आठवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी। लगभग 15 वर्ष की आयु में उन्होंने खेती एवं परिवार के अन्य कार्यों में सक्रिय रूप से सहयोग देना शुरू कर दिया। परिवार के सभी सदस्यों ने मिलकर कठिन परिश्रम किया और धीरे–धीरे खेती को सुधारने का प्रयास किया।

3. बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का प्रयास

प्रारंभ में खेतों में बड़ी मात्रा में पत्थर, झाड़ियां और पेड़ थे। परिवार ने कई वर्षों तक लगातार मेहनत कर भूमि सुधार का कार्य किया। खेत से पत्थर निकलवाए गए, पेड़ों की खुदाई करवाई गई और भूमि को समतल बनाया गया। सिंचाई की सुविधा के लिए परिवार ने मिलकर खेत में कुआं खुदवाया। बिजली की लाइन खेत से लगभग 2000 फीट दूर होने के बावजूद मोटर और पाइप के माध्यम से पानी की व्यवस्था की गई। इस प्रकार धीरे–धीरे बंजर भूमि खेती योग्य बनने लगी।

4. पारंपरिक खेती से शुरुआत

भूमि सुधार के बाद प्रारंभिक वर्षों में परिवार द्वारा ज्वार, सोयाबीन, गेहूं, चना तथा मसूर जैसी पारंपरिक फसलों की खेती की जाती थी। साथ ही सीमित स्तर पर सब्जियों का उत्पादन भी किया जाता था। मिट्टी हल्की होने और संसाधनों की कमी के कारण उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता था। परिवार की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण कर्ज की स्थिति भी बनी रहती थी। इन चुनौतियों के बावजूद परिवार ने खेती को ही अपनी आजीविका का मुख्य आधार बनाए रखा।

5. सामाजिक नेतृत्व

गांव में श्री वृंदावन मेहरा का व्यवहार और कार्यशैली अत्यंत सराहनीय थी। ग्रामवासियों के विश्वास के कारण वर्ष 2009 में उन्हें सर्वसम्मति से ग्राम पंचायत का सरपंच चुना गया। यह चयन बिना किसी प्रचार–प्रसार के हुआ, जो उनके प्रति ग्रामीणों के विश्वास को दर्शाता है।

6. सब्जी उत्पादन की ओर कदम

पारंपरिक खेती से सीमित आय को देखते हुए श्री सुरेश कुमार मेहरा ने वर्ष 2010 से व्यावसायिक रूप से सब्जी उत्पादन प्रारंभ किया। उन्होंने विभिन्न प्रकार की मौसमी सब्जियों की खेती शुरू की और धीरे–धीरे अपने अनुभव के आधार पर खेती की तकनीकों को बेहतर बनाते गए। वर्ष 2010 से 2014 तक उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर सब्जियों की खेती का विस्तार किया और उत्पादन में सुधार लाने के प्रयास किए।

7. आधुनिक तकनीकों का उपयोग

कृषि एवं उद्यानिकी विभाग के मार्गदर्शन से श्री सुरेश कुमार मेहरा ने आधुनिक तकनीकों को अपनाना शुरू किया। वर्ष 2014 में उद्यानिकी विभाग की सहायता से 50 डिसमिल क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित की गई। इसके बाद उन्होंने मल्चिंग तकनीक का उपयोग करते हुए सब्जियों की उन्नत खेती शुरू की। वर्ष 2016 से उन्होंने मल्चिंग तकनीक के माध्यम से सब्जी उत्पादन को और अधिक व्यवस्थित एवं लाभकारी बनाया।

8. जैविक खेती की ओर परिवर्तन

कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विभाग तथा आत्मा परियोजना से प्रेरणा प्राप्त कर श्री सुरेश कुमार मेहरा ने वर्ष 2020 से संपूर्ण 5 एकड़ क्षेत्र में जैविक खेती प्रारंभ की।

जैविक खेती अपनाने से निम्न लाभ प्राप्त हुए–

- मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि।
- उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार।
- स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित उत्पाद।
- लागत में कमी।
- पर्यावरण संरक्षण।

वर्तमान में वे लगभग पांच वर्षों से सफलतापूर्वक जैविक खेती कर रहे हैं।

9. बागवानी और नवाचार

खेती में विविधता लाने के उद्देश्य से श्री सुरेश कुमार मेहरा ने कई फलदार फसलों का उत्पादन भी प्रारंभ किया। उनके खेत में वर्तमान में निम्न फसलें उगाई जा रही हैं–

- एप्पल बेर,
- सेब,
- अनार,
- आम (दशहरी),
- केला,
- ताइवान पपीता,
- ताइवान अमरूद,
- स्ट्रॉबेरी,
- ड्रैगन फ्रूट।

इन फसलों के माध्यम से उन्होंने खेती को एक लाभकारी एवं नवाचार आधारित व्यवसाय में परिवर्तित किया है।

10. सम्मान एवं उपलब्धियां

श्री सुरेश कुमार मेहरा की प्रगतिशील खेती को देखते हुए उन्हें विभिन्न मंचों पर सम्मानित किया गया है।

मुख्य उपलब्धियां–

- सागर एवं भोपाल में सम्मान।
- विभिन्न विभागों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता।
- कृषि संबंधी कार्यक्रमों में आमंत्रित वक्ता के रूप में सहभागिता।
- किसानों को प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन।

कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह, म.प्र. के प्रभारी डॉ. मनोज कुमार अहिरवार का उन्हें विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें नई तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा मिली।

11. अन्य किसानों के लिए प्रेरणा

आज श्री सुरेश कुमार मेहरा अपने गांव तथा आसपास के क्षेत्रों के किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुके हैं। वे किसानों को आधुनिक तकनीकों, जैविक खेती और बागवानी आधारित खेती अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका मानना है कि यदि किसान नई तकनीकों को अपनाएं और वैज्ञानिक तरीके से खेती करें तो खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है।